International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-5, Issue-3 May- June-2018
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

कबीरदास एवं फूले का प्रगतिशील विचार

डॉ.प्रदीप कुमार मीना
हिन्दी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय
सवाई माधोपुर

भारतीय सन्त साहित्य परंपरा में सबसे पहले व्यवस्था की धज्जियाँ उड़ाने वाले प्रथम क्रांतिकारी कवि फक्कड़ सन्त, महान विचारक के रूप में म. कबीर हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। कबीर के क्रांतिदर्शी विचारों की ज्योति न केवल उत्तर भारत में बल्कि भारत के कोने–कोने में पहुँची। कबीर के विचारों से महाराष्ट्र भी प्रभावित हुआ है। जिन महान विचारकों – फुले–शाहू–अंबेडकर के नाम से प्रगतिशील महाराष्ट्र को पहचाना जाता है, विशेषकर जिस महान हस्ती ने समताधिष्ठित मूल्यों का बीजारोपण किया वे म. फुले कबीर को अपना वैचारिक गुरू मानते है।

कबीर जितने महान सन्त हैं, उतने ही श्रेष्ठतम कवि हैं। इनका प्रगतिशील दृष्टिकोण निम्न बातों से स्पष्ट होता हैं–

ईश्वर संबंधी दृष्टिकोण

म. कबीर निर्गुणपंथी भक्त हैं। इसलिए उनका ईश्वर निर्गुण है, निराकार है। कबीर की मान्यता है कि ईश्वर सृष्टि के कण–कण में विराजमान है। अतः उसे मंदिर, मस्जिद या किसर पर्वत पर खोजने की आवश्यकता नहीं है। कबीर के शब्दों में–

''मोको कहाँ ढूँढ़े बंदे, मैं तो पास में।

ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।।

खोजित होय तो तुरत मिलै, पलभर की तलास में।

कहत कबीर सुन भहि साधौ, मैं सासो की साँस में।।''[1]

कबीर जिस एकेश्वरवाद का समर्थन करते हैं, फुले भी एकेश्वर को ही मानते हैं। जहाँ कबीर ईश्वर को 'राम' के नाम से पुकारते हैं, वहीं फुले ईश्वर को 'निर्मिक' मानते हैं। फुले कहते हैं– अगर सारी सृष्टि के निर्माता एक ही हैं तो हमें अलग–अलग रूपों में उसकी पूजा करने की क्या आवश्यकता है। अगर ईश्वर एक है तो मानव धर्म भी एक ही होना चाहिए–

''निर्मिकाने जर एक पृथ्वी केली।। वाही भार भली।। सर्वत्रांचा।।

तृण वृक्ष भार पाळी आम्हासाठी।। फळे ती गोमटी।। छायेसह।।

सुख सोईसाठी गरगर फेरे।। रात्रंदिन सारे।। तीच करी।।

मानवांचे धर्म नसावे अनेक।। निर्मिक तो एक।। जोती म्हणे।।''[2]

मानवतावादी दृष्टिकोण

म. कबीर एवं म. फुले की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दोनों का दृष्टिकोण मानवतावादी रहा है। यही कारण है कि दोनों की कविता मानवमुक्ति का ही गीत गाती है। कबीर की कविता केवल भक्ति की कविता नहीं है वह जहाँ परंपरा को तोड़ने वाली कविता है, वहाँ मानव को मानव से जोड़ने वाली कविता है। जातिगत–धर्मगत भेदभाव मिटाने वाली कविता है। कबीर ने लिखा है –

''जाति–पाँति पूछै नहिं कोई।

हरि को भजै सो हरि का होई।।''[3]

अगर हम एक ही ईश्वर की संतान हैं तो कोई श्रेष्ठ और कनिष्ठ कैसे हो सकता है। ईश्वर के दरबार में सभी जन एक हैं। धर्म के नाम पर तथाकथित धर्ममार्तण्डों ने मनुष्य–मनुष्य के बीच जो दीवार खड़ी की थी, कबीर उस दीवार को तोड़ना चाहते है। भक्त की पहचान जाति नहीं भक्ति है। जो भी समर्पण भाव रखता है, भगवान् का द्वारा सभी के लिए सदैव खुला होता है। कबीर जातिगत लड़ाई को समाप्त करना चाहते थे। समाज में सामाजिक एकता स्थापित करना ही उनका मूल उत्स था।

कबीर और फुले दोनों भी वर्णवादी व्यवस्था को मिटाना चाहते हैं। कबीर लिखते हैं–

''एक बूँद एकै मलमूतर, एक चाम एक गूदा

एक जाति से सब उतपना, कौन बाभन कौन सूदा।।''[4]

कबीर का कहना है कि अगर हमारे शरीर में एक जैसा खून, एक जैसा मल–मूत्र है, सभी अवयव एक जैसे है, सभी का जन्म एक ही मानव जाति से होता है फिर एक ब्राह्मण और दूसरा शूद्र कैसे हो सकता है? यही बात फुले दूसरे शब्दों में कहते हैं–

''खिस्त महंमद। मांग ब्राह्मणासी।

धरावे पोटासी। बंधु परी।।''[5]

ज्ञान एवं सत्य संबंधी दृष्टिकोण

म. फुले एवं म. कबीर दोनों ने भी अपने जीवन में अनन्य साधारण महत्त्व दिया है। कबीर पढ़े–लिखे तो थे नहीं फिर भी ज्ञान की महता प्रतिपादित करते हैं। उनका 'कागज की लेखी से आँखन देखी' पर अधिक विश्वास है। 'ज्ञान' का प्रकाश मात्र हरेक के लिए जरूरी मानते हैं, क्योंकि 'ज्ञान' का प्रकाश ही हमारे जीवन के अंधकार को मिटाता है। दोनों इसी दिशा में प्रयासरत रहे हैं। 'ज्ञान' का प्रकाश मिल जायेगा तो लोग तीसरी आँख से देखेंगे व्यवस्था के सारे भेद खुल जाएंगे। 'ज्ञान' का महत्त्व विशद करते हुए कबीर लिखते हैं–

''जाति न पूछिए साधु की, पूछ लिजिए ज्ञान।

मेल करो तरवार का, पड़े रहन दो म्यान।।''[6]

शिक्षा से ज्ञान मिलता है। अतः फुले की दृष्टि में जब तक जनसामान्यों के लिए शिक्षा के द्वार नहीं खुले किए जाएंगे तब तक उनके जीवन में प्रकाश नहीं फैल सकता। 'ज्ञान' के अभाव में कितने अनर्थ होते हैं, इस संबंध में फुले लिखते हैं–

''विद्या बिन गई मति, मति बिन गई नीति,

नीति बिन गई गति, गति बिन गया वित्त,

वित्त बिन चरमराये शूद्र, एक अविद्या ने किये इतने अनर्थ।।''[7]

कबीर और फुले सत्य की राह पर चलने वाले विचारक हैं। दोनों ने भी सत्य का महत्त्व विशद किया है। उनके मतानुसार सत्य ही ज्ञान है और सत्य ही ब्रह्म है। इस संबंध में उनके ये बहुमूल्य विचार देखिए–

''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

ज हिरदें साँच है, ताकै हिरदै आप।।''[8]

'सत्य' के संबंध में फुले की राय है–

''सत्य सभी का आदि–घर, सभी धर्मों का आश्रय घर।''[9]

जेतीराव का मत है कि सत्य आचरण किये बिना मनुष्य प्राणी इस विश्व में सुखी नहीं हो सकता। स्पष्ट है कि दोनों भी परम 'ज्ञानी' एवं 'सत्यवादी' हैं।

संदर्भ

1. श्रीमती सुशीला सिन्हा – लौह पुरूष कबीर, पृ. 158।
2. महात्मा फुले समग्र वाड्मय, सं. य.दि. फडके, पृ. 535।
3. डॉ. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, सं.– कबीर ग्रंथावली, पृ. 57।
4. डॉ. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, सं.– कबीर ग्रंथावली, पृ. 36।
5. मुलरीधर जगताप–युग पुरूष म. फुले, पृ. 130।
6. श्रीमती सुशीला सिन्हा–लौह पुरूष कबीर, पृ. 56।
7. मुलरीधर जगताप–युग पुरूष म. फुले, पृ. 133।
8. डॉ. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, सं.– कबीर ग्रंथावली, पृ. 59।
9. मुलरीधर जगताप–युग पुरूष म. फुले, पृ. 130।